ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 164-166
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

बिहार के विकास में लालू-राबड़ी का योगदान

रमेश सिंह

व्याख्याता, लोक प्रशासन विभाग, श्रीकृष्ण महिला कॉलेज, जहानाबाद (बिहार) भारत

Received- 05.11.2019, Revised- 11.11.2019, Accepted - 16.11.2019 E-mail: dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *आमतौर पर लालू के समर्थक विकास संबंधी मामलों में राज्य की दयनीय स्थिति को लालू–राबड़ी की देन मानने से इंकार करते हैं। सामान्य तौर पर यह तर्क सामने आता है कि विकास की सारी समस्याएँ पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकारों की गलतियों और वित्तीय अनियमितताओं की देन हैं। लालू पर विकास न करने का आरोप सवर्णवादी मानसिकता वाले लोगों के दिमाग की उपज है, जो पिछड़ों के उभार से घबराए हुए हैं।1 इस तरह के तर्क में थोड़ी सच्चाई हो सकती है। निश्चित रूप से बिहार में लालू के उभार से पहले ही राजनीतिज्ञों ने विकास की चिंता की उपेक्षा शुरू कर दी थी। साथ ही, बिहार में वित्तीय अनुशासनहीनता कांग्रेसी शासन के दौर में ही शुरू हुई। इस तर्क में भी कुछ दम है कि सामान्यतः सवर्णवादी मानसिकता के लोग बिहार की हर समस्या का कारण लालू को मानते हैं। निश्चित रूप से ऐसा मानना गलत है। लेकिन नब्बे के दशक में विकास के संदर्भ में बिहार की दयनीय स्थिति की जिम्मेदारी से लालू बच नहीं सकते। लालू और राबड़ी देवी की सरकारों ने इस संदर्भ में दो महत्वपूर्ण काम किए। पहला, लालू राबड़ी काल में विकास की उपेक्षा और वित्तीय अनुशासनहीनता की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकारों की प्रवृत्तियाँ बहुत गहरी हो गई। दूसरा, लालू राबड़ी ने खुलकर यह कहना शुरू किया कि चुनाव जीतने के लिए विकास की जरूरत नहीं है, चुनाव सिर्फ सामाजिक आधार को मजबूत करके जीते जा सकते हैं। निश्चित रूप से इस तरह की बातें गरीबी की मार झेलते और जीविका के लिए संघर्ष करते लोगों की जरूरतों की उपेक्षा और इनकी दुखद स्थिति के उपहास का प्रतीक थीं।*

कुंजी शब्द – दयनीय स्थिति, इंकार, विकास, पूर्ववर्ती कांग्रेस, वित्तीय अनियमितता, अनुशासन हीनता, सवर्णवादी।

सारणी में दो दशकों के बीच बिहार और भारत के विकास को तुलनात्मक रूप से दिखाया है। इस सारणी में 1994–95 के बाद नये बिहार के विकास को दिखाया गया है, उसके पहले के वर्षों में अविभाजित बिहार के विकास को दिखाया गया है। 1980 के दशक में भारत की जीडीपी (ग्रॉस डॉमेस्टिक प्रोडक्ट या सकल घरेलू उत्पाद) की वृद्धि दर 5.6 फीसद थी। इस दशक में बिहार के की जीडीपी की वृद्धि दर 4.9 फीसद थी। 1991–96 के बीच भारत की जीडीपी की वृद्धि दर 5.4 फीसद था। इन वर्षों के दौरान बिहार के जीडीपी की वृद्धि दर 4.9 फीसद ही रही। लेकिन 1994–2002 के बीच बिहार की जीडीपी में बहुत अधिक गिरावट आई। इस दौरान पूरे भारत की जीडीपी की वृद्धि दर 6.1 फीसद रही, जबकि बिहार की जीडीपी की वृद्धि दर 3.8 फीसद ही रही। स्पष्टतः 1980 के दशक में भी बिहार की जीडीपी की वृद्धि दर राष्ट्रीय जीडीपी की वृद्धि दर से कम थी। लेकिन नब्बे के दशक में यह राष्ट्रीय जीडीपी वृद्धि दर से बहुत अधिक कम हो गयी।

इसी तरह, कृषि क्षेत्र में 1980 के दशक में राष्ट्रीय विकास की दर 3.6 फीसद थी। इस दशक में बिहार में कृषि की विकास दर 4.6 थी। अर्थात् यह राष्ट्रीय विकास दर से भी अच्छी थी। 1991–96 के बीच राष्ट्रीय विकास दर 2.3 फीसद थी। लेकिन बिहार में यह – 2.0 फीसद ही रही। 1994–02 के बीच भारतीय स्तर पर कृषि की विकास दर 3.0 रही। लेकिन बिहार में कृषि विकास की दर 0.8 फीसद ही रही। साफ है कि बिहार में अस्सी के दशक की तुलना में नब्बे के दशक में कृषि क्षेत्र में नगण्य विकास हुआ। अगर हम उद्योग क्षेत्र पर विचार करें तो ऐसा ही नतीजा सामने आता है। अस्सी के दशक में राष्ट्रीय स्तर पर उद्योग के विकास की दर 7.1 फीसद थी। इस दशक में बिहार में उद्योगों के विकास की दर 5.2 फीसद रही। 1991–96 के दौरान उद्योगों के विकास की राष्ट्रीय दर 6.3 फीसद थी। इन वर्षों में बिहार में यह दर 2.2 फीसद ही रही। 1994–02 के बीच राष्ट्रीय दर 6.4 की तुलना में बिहार में उद्योगों के विकास की दर केवल 1.5 रही। सेवा क्षेत्र की कहानी थोड़ी अलग है। इस क्षेत्र में अस्सी के दशक में राष्ट्रीय विकास दर 6.5 थी, जबकि बिहार में विकास दर 5.6 फीसद रही। 1991–96 के दौरान राष्ट्रीय दर 7.0 फीसद और बिहार में यह 2.2 फीसद रही। 1994–2002 के दौरान बिहार ने सेवा क्षेत्र में अपने प्रदर्शन को सुधारा। इन वर्षों के दौरान राष्ट्रीय विकास दर 8 फीसद थी जबकि बिहार में यह दर 6.4 फीसद प्रतिवर्ष रही।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

सारणी–1

दो दशकों (1981–82 से 2001–02) के बीच बिहार और भारत के विकास प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

	अविभाजित बिहार 1981–82 से 1991–92	अविभाजित बिहार 1991–92 से 1995–96	नया बिहार 1994–95 से 2001–02
	दो दशकों के बीच बिहार का विकास प्रदर्शन (1981–82 से 2001–02)		
जीडीपी	4.9	4.9	3.8
कृषि	4.6	–2.0	0.8
उद्योग	5.2	2.2	1.5
सेवा	5.6	2.2	6.4
	दो दशकों के बीच बिहार का विकास प्रदर्शन (1981–82 से 2001–02)		
जीडीपी	5.6	5.4	6.1
कृषि	3.6	2.3	3.0
उद्योग	7.1	6.3	6.4
सेवा	6.5	7.0	8.0

नोटः जीडीपी–ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट सकल घरेलू उत्पाद

स्रोत– बिहारः टुवर्डस ए डेवलपमेंट स्ट्रेटजी, ए वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट, वर्ल्ड बैंक, 2005, पृ.23

नब्बे के दशक में अधिकांश क्षेत्रों में बिहार के विकास की दर राष्ट्रीय दर से कम रही। अस्सी के दशक में भी कृषि क्षेत्र के अपवाद को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रों में बिहार की विकास दर राष्ट्रीय विकास दर से कम रही। लेकिन यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि इन प्रमुख क्षेत्रों में बिहार की विकास दर 1980 के दशक में ज्यादा संतुलित और अच्छी रही। नब्बे के दशक में कृषि और उद्योगों की विकास दर में भारी गिरावट आई। इसने राज्य में अविकास, जड़ता और गरीबों के पलायन को आगे बढ़ाया। उपरोक्त विश्लेषण से यह साफ है कि लालू–राबड़ी के दौर को सिर्फ कांग्रेसी दौर की निरंतरता के रूप में नहीं देखा जा सकता। लालू–राबड़ी के शासन में बिहार विकास की दौर में बहुत अधिक पिछड़ गया।

1990 के बाद के वर्षों में वित्तीय अनुशासनहीनता बहुत अधिक बढ़ गई। इसका नतीजा यह हुआ कि राज्य के कुल बजट का अधिकांश हिस्सा प्रतिबद्ध गैर विकास मद में खर्च हो गया। प्रतिबद्ध गैर विकास खर्च का तात्पर्य वेतन, पेंशन, ब्याज ऋण अदायगी और रख–रखाव में होने वाला खर्च है। यदि हम, उदाहरण के तौर पर, एक वर्ष 2004–05 की विकास मद पर ध्यान दें, तो इस स्थिति को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। इस वित्तीय वर्ष में बिहार का कुल खर्च 20058 करोड़ रूपया था। इसमें राज्य सरकार का विकास खर्च मात्र 3476 करोड़ रूपया था। बाकी राशि प्रतिबद्ध गैर विकास मद में खर्च हुई। 3476 करोड़ रूपये की इस राशि में राज्य योजना केन्द्र प्रायोजित योजनाओं और केन्द्रीय क्षेत्र की परियोजनाओं का खर्च भी शामिल था। इस वर्ष विकास पर होने वाला खर्च पिछले वर्षों की तुलना में ज्यादा था। लेकिन यह कुल खर्च का केवल 17.3 फीसद था। यदि राज्य के प्रति व्यक्ति आय के आधार पर हिसाब लगाया जाए तो यह प्रति व्यक्ति सिर्फ 423 रूपया ही होता है। इसके विपरीत एक वर्ष (2001–02) में कर्नाटक में यह राशि प्रति व्यक्ति 1450 रूपये, गुजरात में 1250 रूपये, आंध्र प्रदेश में 1110 रूपये, राजस्थान में 810 रूपए, उड़ीसा में 610 रूपए और उत्तर प्रदेश में 400 रूपये प्रति व्यक्ति थी।2

1990 के बाद एक और परिघटना सामने आई। अब राज्य सरकार विकास की राशि को खर्च करने में असमर्थ हो गई। इस कारण, बहुत अधिक राशि केन्द्र को वापस लौटानी पड़ी। सारणी में 1980 से विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में स्वीकृत योजना और संशोधित योजना को दिखाया गया है। 1980 के दशक में कांग्रेस का शासन था। उसी समय यह प्रवृत्ति शुरू हो चुकी थी। उस समय राशि खर्च करने में असमर्थता उतनी व्यापक नहीं थी, जितनी यह 1990 के बाद हो गई। उदाहरणार्थ– छठी पंचवर्षीय योजना में बिहार के लिए 3138.61 करोड़ रूपए स्वीकृत किए गए थे। लेकिन अंत में, सरकार 2988.43 करोड़ रूपए ही खर्च कर पाई। इसी तरह, सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90) में स्वीकृत 6901 करोड़ रूपये में बिहार सरकार 6152 करोड़ रूपए खर्च करने में सफल रही।

सारणी–2

राज्य की योजनाओं में क्रमिक उतार (करोड़ रूपए में)

योजना	वर्ष	स्वीकृत योजना	संशोधित योजना
छठी योजना	1980–85	3138.61	2988.43
सातवीं योजना	1985–90	6901.00	6152.00
योजना अवकाश	1990–91	1805.00	1400.00
योजना अवकाश	1991–92	2251.00	1016.00
आठवीं योजना	1992–97	11569.34	5371.00
नौंवी योजना	1997–02	15466.16	9510.34
दसवीं योजना			
पहला वर्ष	2002–03	2964.40	2314.00
दूसरा वर्ष	2003–04	3321.00	2642.00
तीसरा वर्ष	2004–05	4000.00	3059.22

स्रोत– बिहारः टुवर्डस ए डेवलपमेंट स्ट्रेटजी, ए वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट, वर्ल्ड बैंक, 2005, पृ.23

1990–02 के बीच कोई पंचवर्षीय योजना लागू नहीं की गई। योजना अवकाश के दौरान केन्द्र सरकार ने दोनों वर्षों में राज्य के लिए अलग–अलग योजना राशि स्वीकृत की। 1990–91 के दौरान स्वीकृत योजना राशि

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

1805 करोड़ रूपए थी। बिहार सरकार ने इसमें से 1400 करोड़ रूपए खर्च करने में सफलता पाई। 1991–92 में स्वीकृत 2251 करोड़ रूपए में से बिहार सरकार को केवल 1016 करोड़ रूपया ही खर्च किया। 1992–97 के बीच आठवीं पंचवर्षीय योजना लागू रही। इस दौरान बिहार के लिए 11569.34 करोड़ रूपयों की योजना राशि के रूप में स्वीकृत की गई। राज्य सरकार ने इसमें से सिर्फ 5371 करोड़ रूपए ही खर्च किए। नौंवी योजना 1997–02 में बिहार के लिए 15466.16 करोड़ रूपए स्वीकृत हुए। राज्य सरकार ने इस राशि में से केवल 9510.34 रूपया ही खर्च किया। दसवीं पंचवर्षीय योजना 2002–07 में भी राशि खर्च करने के संदर्भ में राज्य सरकार का रिकार्ड अच्छा नहीं रहा। 2002–03 में स्वीकृत 2964.40 करोड़ रूपये में से राज्य सरकार ने केवल 2314 करोड़ रूपये खर्च किए। 2003–04 में स्वीकृत योजना राशि 3320 करोड़ रूपए में से राज्य सरकार ने 2642 करोड़ रूपये ही खर्च किए। इसी तरह 2004–05 में स्वीकृत योजना राशि 4000 करोड़ रूपए की थी और बिहार सरकार उसमें से केवल 3059.22 करोड़ रूपए ही खर्च कर पाई।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि नब्बे के दशक में राज्य सरकार की मशीनरी स्वीकृत योजना राशि का चालीस से पचास फीसद राशि तक खर्च करने में नाकाम रही। यह सच है कि राशि खर्च कर पाने में असमर्थता के रोग की शुरूआत कांग्रेस शासन के दौरान ही हुई थी। लेकिन लालू–राबड़ी काल में यह अपनी चरम अवस्था पर पहुंच गई। इसके लिए कोई तक नहीं दिया जा सकता है, सिवाय इसके कि इस दौरान राज्य सरकार विकास के प्रति पूरी तरह लापरवाह और उदासीन थी। राज्य सरकार इस राशि के माध्यम से वंचित तबकों के लोगों का भला कर सकती थी। लेकिन विकास या वंचित तबकों की भलाई का मसला मानो लालू–राबड़ी के एजेंडे पर दूर–दूर तक कहीं था ही नहीं। सिर्फ पंचवर्षीय योजना ही नहीं वरन् केन्द्र प्रायोजित अधिकांश योजनाओं की राशि का सही तरीके से इस्तेमाल करने में राज्य सरकार नाकाम रहीं।

यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कोई दावे के साथ यह नहीं कह सकता है कि राज्य सरकार केन्द्र द्वारा दी गई, जिस राशि को खर्च करने में सफल रही, वह जरूरतमंद तक पहुंची ही। खासतौर पर इस पूरे संदर्भ में बिहार की सरकारी मशीनरी में व्याप्त भ्रष्टाचार, खर्च हुई राशि के जरूरतमंद के पास पहुंचने के बारे में गहरा शक उत्पन्न करती है। भ्रष्टाचार की शुरूआत भी बाकी बुराइयों की तरह पूर्ववर्ती कांग्रेस शासन के दौरान ही हुई थी। विशेष रूप से अस्सी के दशक में बिहार में कांग्रेस का शासन सत्ता के प्रबंधन, भ्रष्टाचार और भाई–भतीजावाद का पर्याय था। लेकिन लालू–राबड़ी का शासन इस मामले में भी कांग्रेस शासन से कई कदम आगे निकल गया। लालू–राबड़ी के दौर में मानो घोटालों की बाढ़ आ गई। पशुपालन घोटाला, अलकतरा घोटाला, दवा घोटाला, मास्टररॉल घोटाला, शिक्षा घोटाला और बाढ़ राहत घोटाला कुछ बड़े और चर्चित घोटाले रहे।3

निस्संदेह लालू–राबड़ी के दौर में विकास कार्यों की उपेक्षा हुई। सत्ता में रहते हुए हाशिए पर पड़े और जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते लोगों की भलाई के लिए वे कई बुनियादी बदलाव ला सकते थे– पहला, वे भूमि सुधार कर भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को जीविका और जीवन में आगे बढ़ने का साधन उपलब्ध करा सकते थे। दूसरा, केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकृत योजना राशि का सदुपयोग कर वे इसका अधिकतम फायदा गरीबों तक पहुंचा सकते थे। राशि को खर्च करने के बाद ये केन्द्र से अतिरिक्त पैकेज के लिए भी दावा कर सकते थे। तीसरा, राज्य में पूंजी निवेश4 को बढ़ावा देकर ऐसे उद्योगों को स्थापित करा सकते थे, जिसमें गरीब और पिछड़े लोगों को रोजगार मिलता या इसकी जगह लघु उद्योगों को बढ़ावा देने का विकल्प भी अपनाया जा सकता था। लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। यह सामाजिक न्याय की उनकी राजनीति और वंचितों के हितैषी होने के दावे पर सवालिया निशाल लगाता है। यह एक तथ्य है कि विकास का अभाव राज्य की सारी समस्याओं के मूल में है। समाज में बढ़ते तनाव, अपराधीकरण और पलायन के पीछे विकास के अभाव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. के.सी.यादव, लालू प्रसाद यादव और बदलते भारत का अंतर्विरोध, होप इंडिया, गुड़गांव, 2003।
2. बिहार : टुवर्ड्स ए डेवलेपमेंट स्ट्रेटिजी, पूर्वउद्धृत, पृ.44।
3. ग्रामीण विकास मद में वर्ष 1997–2006 के बीच प्राप्त राशि का 22.82 फीसद खर्च करने में राज्य सरकार नाकाम रही। राज्य की वित्तीय स्थिति एवं विकास पर श्वेत पत्र, पूर्वउद्धृत, पृ.44।
4. श्रीकांत, सामाजिक परिवर्तन का इतिहास चक्र, पूर्वउद्धृत, पृ.9।
5. श्रीकांत, सामाजिक परिवर्तन का इतिहास चक्र, पूर्वउद्धृत, पृ.12।

*****